तृतीय अध्यायः

"विवेच्य कहानियों का वर्गीकरण ।"

*****

तृतीय अध्याय : विवेच्य कहानियों का वर्गीकरण

प्रस्तावना :-

कहानी वर्गीकरण कें बारे में विद्वानों में एकमत का अभाव दिखाई देता हैं। कहानी वर्गीकरण के विविध आधार है जिसे निम्नलिखित तालिका के द्वारा कहानी वर्गीकरण के विविध आधारों को प्रस्तुत किया जा रहा हैं।

कहानी वर्गीकरण के विविध आधार

क) विषय	ख) विषय-वस्तु प्रधान	ग) प्रतिपादन शैली	घ) स्वरुप विकास	च) रचना लक्ष्य
१) सामाजिक	१) घटना प्रधान	१) ऐतिहास्कि शैली	१) निर्माण काल	१) आदर्श
२) ऐतिहासिक	२) चरित्र प्रधान	२) पत्रात्मक शैली	२) प्रयोग कालीन	२) यथार्थ
३) धार्मिक	३) भाव प्रधान	३) नाटकीय शैली	३) विकास कालीन	३) आदर्शोन्मुखी-यथार्थ
४) राजनीतिक	४) वर्णन प्रधान	४) आत्मचरित शैली	४) समुन्नति (उत्कर्ष)	
५) आर्थिक	५) कल्पना प्रधान	५) डायरी मिश्र शैली		
	६) हास्य प्रधान	६) उत्तम पुरुष प्रधान शैली		
	७) काव्यात्मक	७) अन्य पुरुष प्रधान शैली		
	८) प्रतीकात्मक			

उपर्युक्त कहानी वर्गीकरण के स्त्रोत ग्रंथ निम्नलिखित है

१. 'हिदी साहित्य कोश' सं. धीरेंद्र वर्मा

२. 'भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र'- देशराजसिंह भाटी

३. 'हिंदी कहानी माला' - आचार्य दुर्गाशंकर मिश्र

४. 'कहानी और कहानीकार' - मोहनलाल 'जिज्ञासु'

अध्ययन की सुविधा के लिए उपर विवेचित विषय वर्गीकरण के आधार पर वर्ष, २००३ 'नया ज्ञानोदय' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों के वर्गीकरण का विवेचन इस प्रकार प्रस्तुत किया जा रहा हैं।

१. सामाजिक

२. ऐतिहासिक

३. धार्मिक

४. राजनीतिक

५. आर्थिक

३.१ सामाजिक कहानियाँ :-

आधुनिक कहानी का विकास आधुनिक समाज के विभिन्न अंगों का चित्रण करने के लिए ही मानो हुआ हैं। सामाजिक कहानी पर प्रकाश डालते हुए 'हिंदी साहित्य कोश' में लिखा है, ''सामाजिक कहानी वह है, जिसका उपजीव्य सारा समाज है, हर व्यक्ति है और इन दोनों की सम्पूर्ण गति हैं, दिशा है, जिसके व्यक्तित्त्व में समाज का सारा व्यक्तित्त्व बँधा है, जैसे कसौटी में स्वर्ण-रेखा खिंची रहती है, जिसकी रचना में सम्पूर्ण समाज का रहस्य , अन्तर्मन और सारा दर्शन छिपा रहता है, जिसका हर पात्र हमारा प्रतिनिधि होता है, जो वह बोलता है, सोचता है, जिस द्वंद्व और करुणा में वह फँसा है, जिस कुंठा , जिस आर्थिक, नैतिक, संस्कारगत, परम्परागत दलदल में वह जूझ रहा है, वह सब हम हैं, हमारा समाज है।'' १

'नया ज्ञानोदय' , वर्ष २००३ में प्रकाशित अधिकांश कहानियाँ सामाजिक कहानियाँ हैं। विवेच्य कहानियों में कहानीकारों ने समाज के विभिन्न अंग-उपांगों पर तथा समस्याओं पर अपना गंभीर चिंतन प्रकट किया हैं। विवेच्य कहानीकारों ने करीब से जो देखा था, भोगा था उसको ही कहानी कला के माध्यम से समाज के सम्मुख रखने का सफल प्रयास किया हैं। उन कहानीकारों का यह चिंतन देखकर उन्हें समाज के सजग प्रहरी कहा जा सकता हैं। विवेच्य कहानियों में समाज के विभिन्न आयाम सामने आए हैं। उनपर निम्नलिखित प्रकार से प्रकाश डाला जा सकता है।

३.१.१ दाम्पत्य जीवन :-

विवेच्य कहानियों में कहानीकारों ने दाम्पत्य जीवन का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। आधुनिक समाज में बदलते परिवेश का चित्रांकन विवेच्य कहानियों में नजर आता हैं।

'नया ज्ञानोदय' अप्रैल, २००३ के अंक में प्रकाशित राजी सेठ द्वारा लिखित 'दलदल' कहानी का नायक अमर बेकार है। उसकी पत्नी आरती अर्थाजन करती है। वह पति को कमीना मानती है। जिसके कारण उनके दाम्पत्य जीवन में बिखराव आ गया है।

दाम्पत्य जीवन में आये हुए बिखराव का चित्रण 'नया ज्ञानोदय' दिसंबर, २००३ के अंक में प्रकाशित जयनंदन द्वारा लिखित 'अपदस्थ' कहानी में चित्रित परिवार का दाम्पत्य जीवन टूट गया है। जिसका चित्रण करते हुए लेखक ने लिखा है, - ''मैं तुमसे माफी नहीं माँग रही, जो चाहे तुम सजा दो, क्यों और कैस हुआ यह सब, सफाई के कोई शब्द नहीं हैं मेरे पास, लेकिन यह हकीकत है कि मैं बेअख्तियार होती रही। तुम इतने भोले और शरीफ रहे कि मैं आराम से तुम्हारी आँखों में धूल झोंकती रही। तुम धूल खाकर भी आजिज न हुए मगर हम धूल झोंककर भी परेशान-हैरान रहे। अब तुम्हारे साथ मेरी ओर से और ज्यादती न हो, इसलिए सब कुछ साफ-साफ बताकर जा रही हूँ। ''२

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी की नायिका अपने पति को त्यागकर, अपने बेटे को लेकर अपने पूर्व प्रेमी क घर जाकर रहने लगती है। जिससे उसका दाम्पत्य जीवन टूट जाता है।

'नया ज्ञानोदय', सितंबर, २००३ के अंक में प्रकाशित गोविंद मिश्र द्वारा लिखित 'तुम हो' कहानी का परिवार उच्चशिक्षित है। पति-पत्नी में असामंजस्य होने के कारण आए दिन दोनों में झगडे हो जाते हैं। बात यहाँ तक बढ़ जाती है कि, पति-पत्नी दोनों विवाह-विच्छेद के लिए अदालत का दरवाजा खटखटाते हैं। इस प्रकार कहानीकार ने विवेच्य कहानी में टूटते दाम्पत्य जीवन का चित्रण प्रस्तुत किया है।

इस प्रकार विवेच्य कहानियों में बिगड़ते दाम्पत्य जीवन का चित्रण प्रस्तुत करके लेखक ने समाज का ध्यान आकृष्ट किया है।

३.१.२ परित्यक्ता जीवन :-

'नया ज्ञानोदय' वर्ष, २००३ में प्रकाशित विवेच्य कहानियों में परित्यक्ता जीवन का विदारक चित्रण कहानीकारों ने प्रस्तुत किया है। और परित्यक्ता के जीवन की भयंकरता को स्पष्ट किया है। विवेच्य पत्रिका के मई के अंक में प्रकाशित दिनेश पाठक द्वारा लिखित ''पारुल दी'' कहानी में परित्यक्ता के जीवन का चित्रण प्रस्तुत किया है। पारुल दी परित्यक्ता का जीवन भोग रही है। उसकी स्थिति देखकर पाठकों का हृदय पिघल जाता हैं।

पारुल के परित्यक्ता जीवन का चित्रण प्रस्तुत करते हुए लेखक ने लिखा है, - ''तभी कोई सालभर बाद पारुल दी का आना हुआ था। पर दर असल यह पारुल दी का आना हीं, वापस लौटना था। एकदम तिरस्कृत, अपमानित और प्रताडित। जिसने भी देखा, अवाक देखता ही रह गया। मुँह खुला का खुला अचंभित। तो क्या यह वही पारुली है ..... किशनानन्दज्यू की पुत्री पारुली ? नहीं यहाँ तो कोई साम्य ही नहीं था, रंचमात्र भी नहीं। मैंने पीड़ा भरी कराह के साथ आँखे मूँद ली थी। यह सच में क्या हो गया था पारुल दी को ! कोटरों में धँसी आँखोंवाली एक कंकालमात्र रह गई थीं वह..... हड्डियों का स्पष्ट ढाँचाभर। कोई देखे तो कैसे पहचाने ! '' ३

'नया ज्ञानोदय', नवंबर, २००३ के अंक में प्रकाशित उर्मिला शिरीष द्वारा लिखित 'सहसा एक बूँद उछली' कहानी में डॉ. काचरु की बेटी परित्यक्ता है। केवल उसने विकलांग

बेटी को जन्म दिया। इसलिए उसका पति उसे छोड़ देता है। वह परित्यक्ता का जीवन व्यतीत करती है।

३.१.३ परित्यक्त जीवन :-

जिस प्रकार परित्यक्ता को पुरुष त्याग देता है। उसी प्रकार परित्यक्त जीवन में स्त्री पुरुष को त्याग देती है। इस पक्ष का चित्रण 'नया ज्ञानोदय' दिसंबर,२००३ के अंक में प्रकाशित जयनंदन द्वारा लिखित 'अपदस्थ' कहानी में हुआ है। प्रस्तुत कहानी का नायक परित्यक्त का जीवन व्यतीत करता है।

३.१.४ विधवा – जीवन :-

विधवा-जीवन की दयनीयता से संबंधित अनेक कहानियाँ विवेच्य पत्रिका के कई अंकों में प्रकाशित हो चुकी हैं। इन कहानियों में विधवा जीवन के विविध पहलुओं को उजागर किया गया हैं। जैसे -

'नया ज्ञानोदय' , दिसंबर, २००३ के अंक में प्रकाशित रमा सिंह द्वारा लिखित 'ग्रहण' कहानी की नायिका वसुंधरा बाल-विधवा है। जिसकी परवरिश करने के लिए उसके पिता तैयार नहीं है। वह सुम्मनके घर नौकरानी के रुप में काम करती है। और अपना उदर निर्वाह करती है। लेखिका ने विधवा जीवन की दयनीयता की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए लिखा है, - ''घर में काम के लिए बच्चों की देखभाल के लिए यदि कोई बेसहारा विधवा मिल जाय, वह भी बिना वेतन के, तो इससे अच्छी बात भला क्या होगी ! वहाँ बैठे हुए सभी लोगों के कान में स्वार्थ की घंटियाँ बजने लगीं..... वसुंधरा, बाल विधवा .....उम्र करीबन पन्द्रह साल ..... पिता बहुत बूढे और बीमार , बस प्राण उसी के लिए अटके थे कि कोई शरणदाता उसकी बेटी को मिल जाय ताकि वह शांन्ति से अपने प्राण त्याग सके .....।'' ४

'नया ज्ञानोदय' जुलाई, २००३ के अंक में प्रकाशित मालती जोशी द्वारा लिखित 'तुम मेरी राखो लाज हरी' कहानी की नायिका संध्या विधवा है। उसके ससुर उस पर आसक्त है।

वह ससुर की वासना का शिकार बनती है। उस पर जो अत्याचार हुआ है। उसके विरोध में वह एक शब्द भी नहीं बोलती। वह अन्याय को सह लेती है। उसके विरोध में आक्रोश नहीं करती।

'नया ज्ञानोदय', जून,२००३ के अंक में प्रकाशित अशोक प्रियदर्शी द्वारा लिखित 'औरत' कहानी की नायिका सिमरन कौर विधवा है। जीवन में आए हुए संकटों का वह डटकर मुकाबला करती है। वह पुनर्विवाह का विराध करके वैधव्यपूर्ण जीवन बिताना उचित मानती है।

'नया ज्ञानोदय' अक्टूबर, २००३ के अंक में प्रकाशित तरुण भटनागर द्वारा लिखित 'धूल की एक परत' कहानी में रानी विधवा है। वह विधवा जीवन का दु:ख भोग रही है।

'नया ज्ञानोदय' नवंबर, २००३ के अंक में प्रकाशित 'उर्मिला शिरीष' द्वारा लिखित 'सहसा एक बूँद उछली' कहानी की नायिका डॉ. काचरु है। वह उच्च शिक्षित है। और वह पुनर्विवाह करने के पक्ष में नहीं है।

इस प्रकार विवेच्य कहानियों में भारतीय विधवा के परंपरागत रुप पर प्रकाश डाला गया हैं।

३.१.५ रिश्तों में आनेवाला बदलाव :-

औद्योगिकरण तथा आधुनिकता के कारण व्यक्ति सिकुड़ता हुआ नजर आता है। आज वह इतना व्यस्त हो गया है कि उसे अपनी माँ की ओर भी ध्यान देने के लिए समय नहीं है।

इस पक्ष का चित्रण 'नया ज्ञानोदय' अक्टूबर, २००३ के अंक में प्रकाशित चंद्रकांता द्वारा लिखित 'रात में सागर' कहानी में हुआ है। कहानी के धीरेंद्र, विरेंद्र नौकरियों में व्यस्त होने के कारण अपनी माँ की ओर ध्यान देने के लिए उनके पास समय नहीं हैं।

'नया ज्ञानोदय' मई, २००३ के अंक में प्रकाशित सुनीता जैन द्वारा लिखित 'पाँच दिन' कहानी की जानकी अपने बेटे के घर पर जाती है लेकिन, उसकी बहू, बेटा उसके साथ अपरिचित जैसा व्यवहार करते हैं। यह देखकर जानकी का हृदय दु:खित हो जाता है।

पाश्चात्य प्रभाव के कारण आज मानव अपने रिश्ते-नातों का भूल रहा हैं। इस पक्ष पर विवेच्य कहानियों में प्रकाश डाला गया हैं।

३.१.६ बालिका विवाह

बालिका विवाह समाज तथा राष्ट्र निर्माण की दृष्टि से हानिकारक माना गया है। इस पक्ष का चित्रण 'नया ज्ञानोदय' मई,२००३ हे अंक में प्रकाशित दिनेश पाठक द्वारा लिखित 'पारुल दी' कहानी की नायिका पारुल दी बालिका विवाह की समस्या से प्रभावित है। अबोध अवस्था की उम्र में उसका विवाह होने के कारण वह जीवन पर्यंत उसका दुःख सीने से लगाकर जीवन यापन करती है। इस प्रकार कहानीकार ने बालिका विवाह के दुष्परिणामों को चित्रित किया हैं।

३.१.७ अविवाहितों का जीवन :-

पाश्चात्य जीवन पद्धति के कारण अविवाहित रहने की समस्या तीव्र होती जा रही है। जिसके कारण अनेक समस्याओं का सामना करना पडता हैं। अविवाहितों के जीवन का चित्रण 'नया ज्ञानोदय' , दिसंबर , २००३ के अंक में प्रकाशित जयशंकर द्वारा लिखित 'भुरमुंडा' कहानी में आया है। कहानी की नायिका अविवाहित जीवन व्यतीत करती है।

३.१.८ शिक्षा का महत्त्व :-

आधुनिक कहानीकारों ने शिक्षा के महत्त्व को जान लिया हैं। अतएव उन्होंने शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए कुछ पात्रों की निर्मिति की हैं। जिसके माध्यम से शिक्षा के निर्विवाद महत्त्व को स्वीकारा है। इस पक्ष का सुंदर चित्रण 'नया ज्ञानोदय' अगस्त, २००३ के अंक में प्रकाशित नफीस आफरीदी द्वारा लिखित 'घर पहाड होता है' कहानी का पात्र किरपाल शिक्षा प्रेमी है। उसके पिताजी उसकी शिक्षा का विरोध करते हैं। जिसका कारण उनके परिवार की आर्थिक विपन्नता है। किरपाल अपने पिता से कहता है एक वक्त की रोटी नहीं मिलेगी तो चलेगा, लेकिन मैं शिक्षा ग्रहण करुँगा। इस प्रकार शिक्षा का महत्त्व प्रतिपादित किया गया है। जो समाज निर्माण के लिए लाभकारी है।

३.१.९ अविकसित संतानों का जीवन :-

अविकसित संतानों की एक अलग दुनिया हैं। ऐसे लोगों की व्यथा को 'नया ज्ञानोदय', दिसंबर, २००३ के अंक में प्रकाशित रमा सिंह द्वारा लिखित 'ग्रहण' में कहानी चित्रित किया है।

अविकसित संतानों का चित्रण करते हुए कहानीकार ने लिखा हैं, - ''क्या करें बहन जी, इस (अविकसित) बेटे की वजह से लगता है, किसी ने गर्म लोहे से हमारे जीवन को दाग कर छोड़ दिया है। जिस जले दाग को हम न किसी को दिखा सकते हैं और न छिपा सकते हैं। अब हम लोग बूढे हुए। हमारे बाद कौन इसकी परवाह करेगा ? माँ होकर भी मैं तो चाहती हूँ मेरे जीते जी यह इस दुनिया से चला जाय..... कहने के साथ वह सुबक उठी।'' ५

'नया ज्ञानोदय' ,नवंबर, २००३ के अंक में प्रकाशित 'उर्मिला शिरीष' द्वारा लिखित 'सहसा एक बूँद उछली' कहानी की नायिका डॉ. काचरु की पोती अविकसित है। जिसके कारण पूरा परिवार चिंतित नजर आता है।

३.१.१० विकलांग व्यक्तियों का जीवन :-

समाज में बहुत बड़ी आबादी विकलांग व्यक्तियों की हैं जिनका जीवन श्रमसाध्य तथा कठिन होता है। वे विकलांग होने के कारण परिवार तथा समाज में उपेक्षा के पात्र बनते हैं। वे सिर्फ प्यार चाहते हैं। उन्हें समाज की ओर से घृणा मिलती है। इस पक्ष का चित्रण विवेच्य कहानी में मिलता है।

'नया ज्ञानोदय', अक्टूबर, २००३ के अंक में प्रकाशित चंद्रकांता द्वारा लिखित 'रात में सागर' कहानी की नायिका की पोती विकलांग है। जो समाज में घृणा का शिकार बनी है।

इस प्रकार विकलांग व्यक्तियों का जीवन विवेच्य कहानियों में चित्रित हैं।

३.१.११ भिखारियों का जीवन :-

भारत देश भिखारियों से त्रस्त हैं। भिखारियों का जीवन भारतीय समाज जीवन का कलंक रहा हैं। इस वर्ग की दयनीयता का चित्रण निम्नलिखित कहानी में हुआ है।

'नया ज्ञानोदय', नवंबर, २००३ के अंक में प्रकाशित चित्रा मुद्गल द्वारा लिखित 'शहर ' कहानी में भिखारियों का जीवन चित्रित हुआ हैं।

३.१.१२ सास द्वारा बहू का शोषण :-

नारी नारी का ही शोषण करती है। इस कथन का अच्छा उदाहरण है। सास द्वारा बहुओं का होनेवाला शोषण। इस पक्ष का चित्रण 'नया ज्ञानोदय', मई, २००३ के अंक में प्रकाशित दिनेश पाठक द्वारा लिखित 'पारुल दी' कहानी में पारुल की सास पारुल का शोषण करती है। उस पर अत्याचार करती है। उसके साथ मार-पीट करती है। यह बहू का शोषण ही है।

अपने अत्याचार की कहानी बताते हुए पारुल कहती है, - ''घर के बाकी सदस्यों के लिए भी मैं आखिर एक बोझ ही तो हूँ। ..... पर सुनो आशी, यह मेरा एकदम अटल निर्णय है, मर जाऊँगी भले, पर उस घर में नहीं जाऊँगी ..... कदापि नहीं। और क्यों जाऊँ मैं ? किसके पास जाऊँ ? उसे पुरुष के पास जो पुरुष है ही नहीं कहीं से भी..... युवा होते हुए भी अपनी माँ के आँचल में बँधा हुआ एक मन्दबुद्धि बालक से ज्यादा नहीं है..... महाकायर..... रीढ़विहीत..... लिजलिजा ..... लुंजपुंज। कहाँ था वह पुरुष तब, जब उसकी माँ मुझे आधापेट भोजन दिया करती थी। तानाकशी से मेरा जीना हराम किये रहती थी।'' पर सबकुछ सहती रही मैं ..... मरती-खपती रही।'' ६

इस प्रकार बहू का शोषण दिखाई देता है।

३.१.१३ आदिवासी जीवन का चित्रण :-

नागरी सुविधाओं से दूर भारत के दूरदराज पहाड़ी क्षेत्रों में आदिवासी लोग सदियों से अपना जीवन यापन कर रहे हैं। वे अपनी संस्कृति की रक्षा कर रहे हैं। नागरी जीवन में रममाण होनेवाले कहानीकार अपनी कहानियों में आदिवासी जीवन की झलकियों को प्रस्तुत करते हैं। जिससे नागरी जीवन के पाठकों को आदिवासी जीवन की संस्कृति का परिचय प्राप्त होता हैं।

'नया ज्ञानोदय', फरवरी; २००३ के अंक में प्रकाशित राकेश कुमार सिंह द्वारा लिखित 'अरण्यरात्रि की महक' कहानी में आदिवासी समाज जीवन का चित्रण प्रस्तुत है। प्रस्तुत कहानी में आदिवासी समाज जीवन में व्याप्त रीति-रिवाज, त्यौहार, संस्कार, उत्सव, अंधविश्वास आदि पहलुओं पर प्रकाश डाला गया हैं।

'नया ज्ञानोदय', जुलाई, २००३ के अंक में प्रकाशित विजय द्वारा लिखित 'जंगल का सपना' कहानी आदिवासी समाज जीवन पर नागरी संस्कृति के अतिक्रमण का अच्छा दस्तावेज है। औद्योगिकरण की वजह से आदिवासी समाज एवं संस्कृति खतरे में है। उसकी रक्षा के लिए आदिवासी लोग प्रयासशील दिखाई देते हैं। आदिवासी जीवन पर प्रकाश डालते हुए विवेच्य कहानी में लिखा है, - ''कभी नुरही में गोंड राजा था। गोंड , कोल और किरात प्रजा से भरा था। लम्बा-चौडा जंगल। पेड, पोध, जडी-बूटी औरकुछ हिस्से में फसल से सम्पन्न थे हम। हम जो थे वहीं बने रहना चाहते थे। बाहरी दुनिया की स्पर्धा से आँखें मूँद रखी थीं हमने। देवता का भरोसा, तीर-कमान पर गर्व था हमें सरकते रहे। हम देवता को मनाते रहे, पर जिनपर बादशाह खुश हुआ और बाद में अँग्रेज साहब, वे बन गये जमींदार। बाकी किसान। हम जंगल में अपने छिपने को सुरक्षा मानते रहे और जंगल सरकारों की रियासत में आ गए। कहीं बाँध बना तो हम खिसके। कहीं तहसील बनी तो हम खिसके। खुद को जंगल का प्रहरी और मालिक समझा। मगर न तो कोई पेड़ हमारे नाम है और न जंगल की जमीन। नरसिंहपुर के जंगलों में हमारी बडी आबादी हैं। हम लड़े ओर जीत सके। मगर सागर, ललितपुर कहीं भी जहाँ हम हैं वहाँ तीस-पैंतीस से ज्यादा घर नहीं हैं। जहाँ भी है वहाँ की जमीन हमारी नहीं है। सुखी लकड़िया उठाना भी जुर्म बन जाता है। और चूल्हा सुलगता कम सुबकता ज्यादा है। हमारे पैरों के नीचे की जमीन हमारी नहीं है और न ही दरख्तों की छाया हमारी हैं। ''७

३.१.१४ पंछियों का जीवन :-

समाज में कुछ लोग पंछियों पर अपार प्रेम करते हैं। उनकी दुनिया पंछियों से परे नहीं होती। इस पक्ष का चित्रण 'नया ज्ञानोदय', फरवरी, २००३, के अंक में प्रकाशित ए. असफल द्वारा लिखित 'प्रत्याशा' कहानी में पंछी प्रेम को चित्रित किया गया है। कहानी के तीनों मित्र कबूतर प्रेमी हैं। तीनों एक की कार्यालय में काम करते हैं। वे तीनों मित्र कबूतरों के जोडों को देखने के लिए छुट्टी के दिनों में भी कार्यालय में आते हैं। जहाँ पर कबूतरों ने अपना घर बनाया हैं। अत: वे तीन मित्र पंछी प्रेमी है।

'नया ज्ञानोदय', नवंबर, २००३ के अंक में प्रकाशित सेराज खान 'बातिश' द्वारा लिखित 'एक चिडिया का शोकगीत' कहानी में परिंद फरोशी के जीवन का चित्रण आया है कुछ लोगों का यह व्यवसाय होता है कि होनहार पंछियों को पकड़ना, पिंजड़े में बंदिस्त करके बेच देना। ऐसे पंछियों की आजादी छीनने का काम यह लोग करते हैं।

'नया ज्ञानोदय', फरवरी, २००३ के अंक में प्रकाशित चंद्रिका ठाकुर, 'देशदीप' द्वारा लिखित 'पापिन पाँखी' कहानी में 'दलचिरैया' नामक पंछी का जिक्र आया है। कामा बुआ का विश्वास है कि यह चिड़िया अपशकुन बोली बोलती है जिसका जिक्र करते हुए लेखिका ने लिखा है, ''.... पिर्र ऽऽऽ.... पिर्र ऽऽऽ पिरापिरा उठी चिड़िया तो कामा बुआ के कान में पिघला हुआ तेल पड़ गया .... पिर्र ऽऽऽ जैसे अगिन-बाण उतर गया कलेजे में तीन रात से लगातार इसी सहुढ़ा-गाछ पर दलचिरैया बोल रही है ! एक ही समय..... रोज अधरन्निया में ! बड़ा अपशकुन होता है - '' इस मुँहजली की बोली .....! जब बोलेगी तो अशुभ। पिरपिराएगी तो कोई न कोई खून लेगी ..... जरुर ही ! ''..... दुश्चिन्ता की ढ़ेर सारी लकीरें तन जाती हैं कठोर से चेहरे पर फिर जाने किस दैव-कोप को शान्त करने, भर लोटा पानी अँगना में उलीछ देती है।'' ८

इसप्रकार दलचिरैया चिड़िया की बोलीपर अंधविश्वास रखनेवाला एक वर्ग समाज में दिखाई देता है।

३.१.१५ <u>बाल कैदियों का जीवन :-</u>

अबोध अवस्था में अपराध घटित होनेपर बालकों को बाल सुधार गृहों में रखा जाता हैं। लेकिन वहाँ पर कैदी बालकों का शोषण होता हैं। यहाँ तक कि उनका लैंगिक शोषण किया जाता है। संस्कारों के नाम पर बालकों को बिगाड़ दिया जाता हैं। यह बात गंभीर है।

३.१.१६ सैनिक जीवन :-

देश की रक्षा करनेवाले सैनिकों का जीवन अलग प्रकार का होता हैं। वे अपने परिवारों से दूर देश की सीमा पर, देश की सुरक्षा के लिए २४ घंटों देश की सेवा के लिए अपना जीवन व्यतीत करते हैं। युद्धजन्य परिस्थिति में ऐसे सैनिकों की जिम्मदारी और बढती हैं। जिससे सैनिक जीवन का महत्त्व और बढ़ जाता है।

'नया ज्ञानोदय', दिसंबर, २००३ के अंक में प्रकाशित हीरालाल नागर द्वारा लिखित 'डेक पर अंधेरा' कहानी में सैनिक जीवन का चित्रण आया है। भारतीय शांति सेना का एक दल जाफ़ना जा रहा है। जिसमें नायक संजय चौगालिया के साथ उनके साथी भी है। उन्हें अपने परिवार की याद सताती है। लेकिन सभी सैनिक अपनी ड्युटी निभाने के लिए तैयार हैं। इस प्रकार सैनिक जीवन का सुंदर चित्रण प्रस्तुत कहानी में दिखाई देता है।

३.२ ऐतिहासिक कहानी :-

इतिहास का आधार लेकर लिखी गई कहानी ऐतिहासिक कहानी है। ऐतिहासिक कहानी में अपने अतीत का गौरव, राष्ट्रप्रेम, आदर्श की स्थापना आदि पहलुओं पर प्रकाश डाला जा सकता हैं। ऐतिहासिक कहानी की विशेषता पर प्रकाश डालते हुए ''हिंदी साहित्य कोश'' में लिखा है - ''वर्तमान से अतीत को जोड़ने अथवा दोनों में रसमय संबंध स्थापित करने का माध्यम केवल कल्पना हैं अतएव ऐतिहासिक कहानी में कल्पना एवं तर्कजनित भावुकता का प्रवेश अत्यंत आवश्यक है।''९ कोरी कल्पना ऐतिहासिक कहानी का गला घोट देती है।

३.२.१ इतिहास का दर्शन :-

'नया ज्ञानोदय', अक्टूबर, २००३ के अंक में प्रकाशित तरुण भटनागर द्वारा लिखित 'धूल की एक परत' कहानी विषय की दृष्टि से ऐतिहासिक कहानी प्रकारांतर्गत आ जाती है। लेखक ने ऐतिहासिक वातावरण निर्मिति करते हुए लिखा है - ''जो पुराने राजा-महाराजाओं की पेंटिगों के नीचे विशाल मेहराबदार दरवाजा था, जो हॉल को अन्दर के कमरे से जोड़ता था। मेरे ठीक पीछे अखरोट की लकड़ी का बना विशाल पार्टीशन रखा था, जिस पर सुन्दर कार्विंग की गई थी और जो हॉल को दो भागों में बाँटता था। उस पार्टीशन के पीछे डाइनिंग टेबल रखी थी। पार्टीशन के एक-दो पाये टूटे थे और उसकी लकड़ी जगह-जगह से फटी थी। ड्राइंग रुम में पुरानी शैली के शीशम की लकड़ी के सोफे रखे थे। लगभग आधे हॉल में एक पुराना कश्मीरी कालीन बिछा था, जिसकी शनील कुछ जगहों से उघड़ गई थी और सूत की सिलाई दिखाई दे रही थी। बीच में सेण्ट्रल टेबल रखी थी, जिसके चिटके काँच को जोड़कर ठीक किया गया था। छत से एक इटैलियन कट का विशाल फानूस लटक रहा था।''[१०]

यह विवेच्य कहानियों में एक मात्र कहानी ऐसी है, तो इतिहास और कल्पना का सुंदर समन्वय प्रस्तुत करती है। प्रस्तुत कहानी के माध्यम से कहानीकार ने जनप्रिय राजा, कल्याणकारी राजा, निस्वार्थ राजा आदि भारत के अतीत के राजाओं के गुणों पर प्रकाश डाला हैं। विवेच्य कहानी में चित्रित राजा के इतिहास के बारे में कोई भी प्रमाण ऐतिहासिक ग्रंथों नें नहीं मिलता।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि विवेच्य पत्रिका के कहानीकार अतीत में रममाण नहीं हुए। वे वर्तमान में जीना अधिक पसंद करते हैं।

३.३ धार्मिक कहानियाँ :-

जिन कहानियों में धर्म के विविध अंगों का चित्रण होता हैं। वे कहानियाँ धार्मिक कहानियों की कोटि में आती है। धर्म के नाम पर होनेवाला शोषण रीति-रिवाज, रुढ़ि संस्कार इन पक्षों का चित्रण धार्मिक कहानियों में होता हैं। प्रस्तुत कहानी प्रकार के अंतर्गत आनेवाली

कहानियाँ समाज के लिए मार्गदर्शक का काम करती हैं। धर्म के नाम पर होनेवाला शोषण अन्याय, अत्याचार के दुष्परिणामों को समाज के सामने रखती हैं।

'नया ज्ञानोदय' वर्ष, २००३ में प्रकाशित कुछ कहानियाँ धार्मिक रही हैं। इन कहानियों के माध्यम से विवेच्य कहानीकारों ने धर्म के विभिन्न रुपों पर प्रकाश डालने की कोशिश की हैं। जिसे निम्न लिखित प्रकार से प्रस्तुत किया जा रहा है।

३.३.१ अंधविश्वास :-

धर्म के नाम पर किये जानेवाले संस्कार, रीति-रिवाज, रुढ़ि परंपरा, इनमें आनेवाली विकृति अंधविश्वास, कहलाई जाती है। जिसमें विज्ञान पर आधारित दृष्टिकोण का अभाव होता है। अंधविश्वास के नाम पर किये जानेवाले ढ़कोसलों से समाज तथा राष्ट्र को भारी हानि उठानी पडती हैं।

'नया ज्ञानोदय' , फरवरी, २००३ के अंक में प्रकाशित राकेश कुमार सिंह द्वारा लिखित 'अरण्यरात्रि की महक' कहानी में अंधविश्वास के दर्शन होते हैं। कोयली मुंड़ा कहानी का नायक है। जिसका बेटा बीमार है। उसे अस्पताल में ले जाने के बजाय वह ''जंगली जड़ी-बुटियाँ और बैगा की झाड़फूँक ..... ! मन्त्र द्वारा तिल्ली काटनेवाला कौड़ी फेंक कर साँप को नचाने वाला, कर्णपिशाच को वश में कर लेने वाला बैगा भी डोनका को ठीक नही कर सका था । ठीक तो क्या होता डोनका छः महीनों में और सूख कर काँढ़र हो गया था। ''११

इस प्रकार नायक अंधविश्वासी है। जो अपने समाज का प्रतिनिधित्त्व करता है।

'नया ज्ञानोदय', फरवरी, २००३, के अंक में प्रकाशित चंद्रिका ठाकूर 'देशदीप' द्वारा लिखित 'पापिन पाँखी', कहानी में कहानी की नायिका कामा बुआ अंधविश्वासी है। जिसका जिक्र करते हुए लेखक ने लिखा है, ''तीन रात से लगातार इसी सहुढ़ा- गाछ पर दलचिरैया बोल रही है ! एक ही समय..... रोज अधरतिया में ! बडा अपशकुन होता है - '' इस मुँहजली की बोली .....! जब बोलेगी तो अशुभ! पिरपिराएगी तो कोई न कोई खून लेगी .....

जरुर ही ! ''..... दुश्चिंता की ढ़ेर सारी लकीरें तन जाती हैं कठोर से चेहरे पर। फिर जाने किस दैव-कोप को शान्त करने भर लोटा पानी अँगना में उलीछ देती है।'' १२

इस प्रकार समाज में व्याप्त अंधविश्वास पर विवेच्य कहानियों में प्रकाश डाला हैं।

३.३.२ तीर्थ स्थलों पर अनाचार :-

प्रत्येक धर्म के तीर्थ होते हैं। भाविक ऐसे स्थलों की यात्रा करते हैं। लेकिन वहाँ जानेपर उनकी निराशा होती है। धर्म के नाम पर तीर्थ स्थलों पर काले धंधे किए जाते हैं। जो धर्म के लिए हानिकारक है। प्रस्तुत पक्ष का चित्रण 'नया ज्ञानोदय' फरवरी, २००३ के अंक में प्रकाशित राकेश कुमार सिंह द्वारा लिखित 'अरण्यरात्रि की महक' कहानी में हुआ है। विवेच्य कहानी में गँजेड़ी बाबा का धाम है। प्रस्तुत धाम का चित्रण करते हुए लेखक ने लिखा है, - ''सीढ़ियाँ समाप्त होते ही विशाल बरामदा था जहाँ गाँजे का प्रसाद बँट रहा था। चिलमें भरी ओर खींची जा रही थीं। नशे में मत्त -तरंगायित भक्त-समूह ढ़ोल-झाल खड़ताल पीटता। कीर्तन कर रहा था। कुछ भाव-विभोर भक्तजन होश-हवास गँवाए अस्त-व्यस्त लोट रहे थे। गाँजे के कसैले धुएँ से फौजा सिंह को मितली-सी आने लगी थी।''१३ इस प्रकार तीर्थ स्थलों पर अनाचार का चित्रण हुआ हैं।

३.३.३ सांप्रदायिकता :-

स्वाधीनता प्राप्ति के समय सांप्रदायिक समस्या ने गंभीर रुप धारण कर लिया। जिसके कारण देश का विभाजन हो गया। भारत में दिन-ब-दिन सांप्रदायिकता विकराल रुप धार कर रही है। जिससे धर्म बदनाम हो रहे हैं। राष्ट्रीय एकात्मता के लिए सांप्रदायिकता हानिकारक साबित हो रहीहै। सांप्रदायिकता का चित्रण विवेच्य पत्रिका में दिखाई देता है।

'नया ज्ञानोदय' अप्रैल, २००३ के अंक में प्रकाशित शिवकुमार यादव द्वारा लिखित 'कई-कई शकलोंवाले प्रेत' कहानी में सांप्रदायिकता से प्रभावित परिवारों की दुर्दशा का चित्रण यथार्थता के साथ प्रस्तुत किया गया हैं।

३.४ राजनीतिक कहानियाँ :-

राजनीति समाज के सभी क्षेत्रों को प्रभावित करती हैं। फलस्वरुप लेखक जब साहित्य सृजन करता है। तब अपने-आपमें राजनीति से संबंधित कई पहलुओं का चित्रण संवेदनशील कहानीकारों के कहानियों में आ जाता हैं। साम्राज्यवादी भूमिका से प्रेरित होकर युद्ध खेले जाते हैं। और साम्राज्यवाद का आधार राजनीति रही है।

'नया ज्ञानोदय' की विवेच्य कहानियों में राजनीतिक कहानियाँ कम पैमाने पर लिखी गई हैं। कुछ कहानियों में राजनीति से संबंधति कुछ पहलुओं के दर्शन होते हैं। वे निम्नलिखित प्रकार से है।

३.४.१ युद्ध का परिवेश :-

'नया ज्ञानोदय', दिसंबर, २००३ के अंक में प्रकाशित हीरालाल नागर द्वारा लिखित 'डेक पर अँधेरा ' कहानी में युद्ध का चित्रण दिखाई देता है। जिससे वहाँ का पूरा समाज त्रस्त है।

३.४.२ शरणार्थियों का दयनीय जीवन :-

युद्ध राजनीति से प्रेरित होते हैं। युद्ध में हारे हुए लोगों को शरणार्थियों के शिबिर में दाखिल किया जाता हैं। ऐसे शरणार्थियों के साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता हैं। इस पक्ष का चित्रण 'नया ज्ञानोदय' फरवरी, २००३ के अंक में प्रकाशित ज्ञान प्रकाश विवेक द्वारा लिखित 'रिफ्यूजी कैम्प' कहानी में चित्रित हैं। जो चित्रण अत्यंत दयनीय रहा है।

इस प्रकार विवेच्य कहानियों में राजनीतिक जीवन का चित्रण मिलता हैं।

३.५ आर्थिक कहानियाँ :-

अर्थ मानव जीवन का नियामक है। अर्थ को साधन के रुप में देखा जाता था। लेकिन आज वह साध्य बन गया है। अर्थ सर्वस्व बन गया है। अर्थ के बिना जीवन निरर्थक बन गया है। जिन कहानियों में अर्थ जीवन के विविध पहलू चित्रित होते हैं। वे कहानियाँ आर्थिक कहानियाँ

कहलाई जाती है। 'नया ज्ञानोदय' के विवेच्य कहानियों में अर्थ जीवन के निम्नलिखित पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। वे इसप्रकार हैं।

३.५.१ आर्थिक विपन्नता :-

आर्थिक विपन्नता के कारण मनुष्य को विभिन्न कठिनाइयों का सामना करना पड़ता हैं। ऐसे पक्षों का चित्रण 'नया ज्ञानोदय' अगस्त,२००३ के अंक में प्रकाशित नफीस आफरीदी द्वारा लिखित ''घर पहाड़ होता है'' कहानी में आर्थिक विपन्नता का चित्रण आया है। जिससे पूरा परिवार प्रभावित है।

'नया ज्ञानोदय', अक्टूबर, २००३ के अंक में प्रकाशित तरुण भटनागर द्वारा लिखित 'धूल की एक परत' कहानी में रानी का परिवार आर्थिक विपन्नता का शिकार बन चूका है। यहाँ तक कि, बिजली का बिल अदा करने के लिए उनके पास पैसे नहीं है।

३.५.२ मजदूरों का शोषण :-

मजदूर ऐसा वर्ग है जिनका चारों ओर से शोषण होता है। इनका आर्थिक स्तर अच्छा नहीं होता।

'नया ज्ञानोदय', अक्टूबर, २००३ के अंक में प्रकाशित कृष्ण बिहारी द्वारा लिखित 'धोबी का कुत्ता' कहानी में नायक तथा उसका मित्र दोनों धोबी के दुकान में काम करते हैं। दुकान का मालिक इन मजदूरों का आर्थिक शोषण करते हैं। उन्हें नियत समय पर वेतन नहीं दिया जाता। पैसे माँगने पर मार-पीट की जाती है। इस प्रकार मजदूरों का शोषण होता हैं।

निष्कर्ष

२१ वी शती के कहानीकार समाज के सजग प्रहरी रहे हैं। विवेच्य कहानियों में अधिकांश कहानियाँ सामाजिक आशय-विषय से संबंधित रही हैं। असामंजस्य के कारण दाम्पत्य जीवन में आनेवाला बिखराव,परित्यक्ता का जीवन, परित्यक्त का जीवन की दाहकता इस पीढ़ी के कहानीकारों में नजर आती हैं। विधवा जीवन का चित्रण अधिकांश कहानी में पाया जाता हैं। औद्योगिकरण के कारण रिश्तों में आनेवाला बदलाव कुछ कहानियों का वर्ण्य-विषय हैं। बालिका विवाह की गंभीर समस्या की ओर भी कहानीकारों ने समाज का ध्यान आकृष्ट किया हैं। अविवाहितों का जीवन एक नई उलझन लेकर आता हैं। शिक्षा के महत्त्व को आधुनिक कहानीकारों ने निर्विवाद रुप से स्वीकारा हैं। अविकसित संतानों का जीवन एवं विकलांग व्यक्तियों का जीवन विवेच्य कहानियों में नजर आता हैं। सास द्वारा बहू का शोषण भारतीय समाज व्यवस्था की महत्त्वपूर्ण विशेषता विवेच्य कहानियों में दिखाई देती हैं।

विवेच्य कहानीकारों ने आदिवासी जन-जीवन का विराट फलक प्रस्तुत किया हैं। जिसमें आदिवासी जन-जीवन के विविध आयाम दिखाई देते हैं। बाल - कैदियों का शोषण युक्त जीवन काफी गंभीर हैं। सैनिक जीवन की गहराइयों को यथार्थता के साथ विवेच्य कहानी में चित्रित किया हैं।

नई सदी के कहानीकार वर्तमान में जितने रममाण हो गए हैं, उतने भूतकाल में नहीं। धर्म के नामपर किए जानेवाले अत्याचार की खोलकर निंदा की गई है। राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में विसंगतियों पर कड़ा प्रहार किया हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१.	सं. धीरेंद्र वर्मा, हिंदी साहित्य कोश	पृ.२१८
२.	'नया ज्ञानोदय', दिसंबर, २००३ जयनंदन - अपदस्थ	पृ. ८५
३.	वही, मई, २००३ दिनेश पाठक - पारुल दी	पृ.११०
४.	वही, दिसंबर, २००३ रमा सिंह - ग्रहण	पृ. ३२,३३
५.	वही वही - वही वही	पृ.३७
६.	वही, मई, २००३, दिनेश पाठक,- पारुल दी	पृ. १२१
७.	वही, जुलाई, २००३, विजय - जंगल का सपना	पृ. ९०
८.	वही, फरवरी, २००३, चंद्रिका ठाकुर 'देशदीप'- 'पापिन पाँखी'	पृ. ८३
९.	सं. धीरेंद्र वर्मा, हिंदी साहित्य कोश	पृ. २१७
१०.	'नया ज्ञानोदय' अक्टूबर, २००३, तरुण भटनागर - धूल की एक परत	पृ. ४४
११.	वही, फरवरी, २००३ राकेश कुमार सिंह - अरण्यरात्रि की महक	पृ. ७७
१२.	वही, वही, चंद्रिका ठाकुर 'देशदीप' - पापिन पाँखी	पृ. ८३
१३.	वही, वही, राकेश कुमार सिंह - अरण्यरात्रि की महक	पृ ८०